International Journal of Applied Research 2019; 5(10): 42-45

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(10): 42-45
www.allresearchjournal.com
Received: 25-08-2019
Accepted: 27-09-2019

डॉ. जटाशंकर आर. तिवारी
सहायक प्राध्यापक–होटल प्रबंध,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, उत्तराखंड, भारत

डॉ. देवेश कुमार मिश्र
सहायक प्राध्यापक– संस्कृत
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. जटाशंकर आर. तिवारी
सहायक प्राध्यापक–होटल प्रबंध,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, उत्तराखंड, भारत

उत्तराखण्ड में पर्यटन के अवसर एवं चुनौतियाँ

डॉ. जटाशंकर आर. तिवारी, डॉ. देवेश कुमार मिश्र

संक्षेप
उत्तराखण्ड एक पर्वतीय राज्य है। यहाँ चारो तरफ नैसर्गिक सौंदर्य व्याप्त है जो अनायास ही पर्यटकों को अपनी ओर खींचती है। यहाँ की सुरम्य वादियाँ, बर्फ से लदे उन्नत गिरि शिखर, कल–कल ध्वनि करती सदावाहिनि नदियाँ, घास के मैदान और घने जंगल आदि काल से ही पर्यटकों के आकर्षण केंद्र रहे हैं। उत्तराखण्ड में साहसिक पर्यटन, तीर्थाटान, पारिस्थितिकी पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, मीटिंग, इंसेंटिव टूर, प्रदर्शनी और सम्मेलन के क्षेत्र में पर्यटन के विकास की प्रबल सम्भावनाएँ हैं। यहाँ पर्यटन के विकास के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होते हुये भी पर्यटन का उचित विकास नहीं हुआ है। इस शोधपत्र में उत्तराखण्ड में पर्यटन के विकास में आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी है।

कुट शब्दः उत्तराखण्ड, पर्यटन, अवसर, चुनौतियाँ

प्रस्तावना
प्राकृतिक सौन्दर्य जैसे –समुद्र–तट, वन, पहाड़, नदियाँ, जलशय इत्यादि पुरातन काल से ही मानव को आकर्षित करते रहे हैं। उत्तराखण्ड एक पर्वतीय प्रदेश है, जहाँ प्राकृतिक सुंदरता चारो ओर व्याप्त है। सम्पूर्ण प्रदेश में पर्यटन के बहुमुखी विकास की अपार सम्भावना हैं। उत्तराखण्ड राज्य का विस्तार ७७०३४'४५" पूर्वी देशान्तर से ८१.२० पूर्वी देशान्तर तक तथा २८० ४३' उत्तरी अक्षांश से ३१०२७' उत्तरी अक्षांश तक है (उत्तराखंड सरकार का आधिकारिक वेब साइट)। हिमालय पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित यह प्रदेश भारत के 27 वें राज्य के रूप में 9 नवम्बर 2000 को अस्तित्व में आया (उत्तराखण्ड सरकार का आधिकारिक वेब साइट) । इस प्रदेश में गढ़वाल तथा कुमाऊ दो मंडल हैं। देहरादून, हरिद्वार, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल, पौडी गढ़वाल तथा उत्तरकाशी गढ़वाल मंडल के जिले हैं तथा अल्मोडा, नैनीताल, पिथौरागढ़, ऊधम सिंह नगर, चम्पावात और बगेश्वर कुमाऊ मंडल के जिले हैं । यह प्राकृतिक संसाधनों जैसे ग्लेशियरों, नदियों, घने जंगलों और बर्फ से ढकी पर्वत चोटियों के साथ यह प्रदेश विशेष रूप से पानी और जंगलों से समृद्ध है। ये सभी प्राकृतिक संसाधन अपने आप मे पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। अल्मोड़ा,औली, बागेश्वर, भोवाली, बिनसर, चकराता, चंबा, चौकोरी, देहरादून, देवप्रयाग, धनौल्टी, ग्वाल्दम, हर्षिल, हरिद्वार, हेमकुंड साहिब, जागेश्वर धाम, कौसानी, लांसडाउन, मसूरी, मुक्तेश्वर, नैनीताल, मुंसियारी, पाताल भुवनेश्वर, पुर्णागिरि, रानीखेत, ऋषिकेश, रुद्रप्रयाग फूलों की घाटी आदि इस पर्वतीय प्रदेश के कुछ प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं तथा बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री उत्तराखण्ड के चार धाम के रुप में प्रतिष्ठित हैं। यह सही अर्थों में उत्तराखण्ड की भूमि देव भूमि है।

उत्तराखण्ड में पर्यटन के अवसर तथा सम्भावनाएं
पर्यटन रोजगार के अवसर पैदा करता है। यह गरीबी दूर करने एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभरा है। रोजगार के अवसर जुटाने में इसका योगदान बहुत ज्यादा है। सामाजिक और सांस्कृतिक लगाव और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के राष्ट्रीय लक्ष्य तक पहुंचने में घरेलू पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका है। उत्तराखण्ड एक प्रकृतिक सम्पदा सम्पन्न पहाड़ी राज्य है। यहाँ की सुरम्य वादियाँ, हरे भरे पहाड़, बर्फ से ढकी पर्वत चोटियाँ, कल–कल ध्वनि करती नदियाँ, घास के मैदान और घने जंगल आदि काल से सभी को लुभाते रहे हैं। उत्तराखण्ड में साहसिक पर्यटन, तीर्थाटान, पारिस्थितिकी पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, मीटिंग, इंसेंटिव टूर, प्रदर्शनी और सम्मेलन के क्षेत्र में पर्यटन के विकास की प्रबल सम्भावनाएँ हैं।

साहसिक पर्यटन (Adventure Tourism)
साहसिक पर्यटन, पर्यटन की वह धारा है जिसमें पर्यटक अपने यात्रा के दौरान ऐसी साहसिक गतिविधियों में प्रतिभाग करता है जिसमें रोमांच के साथ–साथ सम्भावित खतरे भी होते हैं (बक्ले, 2010)।

उत्तराखण्ड की मनोरम वादियों का नैसर्गिक सौन्दर्य, गगनचुम्बी हिमाच्छादित गिरि शीर्ष, दुर्गम जंगल, गलेशिर और सदानीरा नदियों के नयानाभिराम दृश्य पर्यटकों को जोश और उमंग से भर देते हैं। उच्च हिमालय के पर्वत शिखर साहासिक पर्यटकों को हमेशा चुनौती भरा आमंत्रण देते है। यही कारण है कि यहाँ के प्राकृतिक वातावरण से सम्मोहित पर्यटक, अपनी यात्रा की सारी थकान भूल कर साहसिक कृत्यों के लिये लालायित हो उठता है। जीवन में रोमांच और नयापन लाने के लिए ही इस क्षेत्र की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए बड़ी संख्या में आज का युवा, साहसिक पर्यटन की ओर आकर्षित हो रहा है। इसमें रोमांच के साथ हर पल अभियान में शामिल पर्यटक के सिर पर खतरा मंडराता रहता है। फिर भी अनेक पर्यटक परम्परागत पुरानी पर्यटन पद्धति से हट कर अब साहसिक पर्यटन की ओर रूख कर रहे हैं। पद–चालन, पैराग्लाइडिंग, ट्रैकिंग, पर्वतारोहण, शिलारोहण (रॉक क्लाइम्बिंग), रिवर राफ्टिंग, नौकायन, नौका विहार, बंजी जंपिंग, स्कूबा डाइविंग, जोर्बिंग, स्कीइंग, आइस हॉकी तथा ग्लाइडिंग जैसे साहसिक खेलों के लिये यह प्रदेश एक अच्छे विकल्प के रूप में उभर रहा है।

ट्रैकिंग के लिए यहाँ कई ट्रैकिंग रूट हैं। पिण्डारी ग्लेशियर, सुन्दरढूंगा ग्लेशियर, कफनी ग्लेशियर, मैकतोली ग्लेशियर, नामिक ग्लेशियर, मिलम ग्लेशियर, पोंटिग ग्लेशियर, गंगोत्री ग्लेशियर, यमुना बेसिन में बन्दरपुंछ ग्लेशियर तथा नन्दादेवी ग्लेशर समूह ट्रैकिंग के लिये प्रसिद्ध है। चमोली जिले से तिब्बत को जोड़ने वाले माणा, नीति, कुंगरी बिंगरी व दारमा दर्रों का ट्रैकिंग मार्ग रोमांचक और जोखिमपूर्ण है। नंदादेवी शिखर, कामेट, त्रिशूल, चौखम्बा, नंदाघूंटी, पंचाचूली, नंदाकोट शिखर, बंदरपूंछ, गंगोत्री, नीलकंठ और शिवलिंग आदि शिखर सादा से पर्वतारोहियों को आकर्षित करते रहे हैं।

भागीरथी, अलकनन्दा, यमुना, पिण्डर, काली, धैली, सरयू आदि नदियाँ रीवर राफ्टिंग और जल क्रीड़ाओं के लिये उपयोगी हैं। नन्द प्रयाग से कर्णप्रयाग, रूद्रप्रयाग, देवप्रयाग, व ऋषिकेश जल मार्ग में रीवर राफ्टिंग पहले से ही होती रही है। नौकायन, पैडल बोट्स, कयाकिंग, कनोइंग व स्पीड बोट्स नौकायन नानकमत्ता सरोवर, जमरानी बांध, तुमड़िया बांध, कालागढ़ बॉध, नैनीझील (नैनीताल) भीमताल, नौकुचियाताल आदि में सामान्य रूप से होती रहती है। स्कीइंग के लिये औली, दयारा बुग्याल, मुनस्यारी व मुण्डाली में अच्छा भविष्य है। पिथौरागढ़, भीमताल, जौलीग्रान्ट और पौड़ी में हैंग ग्लाडिंग व पैराग्लाइडिंग के लिए विपुल सम्भावनाएं हैं।

तीर्थाटन (Pilgrimage Tourism)

पर्यटन की प्रेरणा में आधत्मिकता का अंश हो और देवता के दर्शन की अभिलाषा उसके साथ जुड़ जाये तो एक तीसरी वृत्ति पैदा होती है, जिसे 'तीर्थाटन' कहते हैं। साधरण बोल चाल मे तीर्थटन का अर्थ है तीर्थों का भ्रमण। जन सामान्य की यह कल्पना है कि उनके आराध्य जन कोलाहल से बहुत दूर लोगों के लिए अगम, दुर्गम उत्तुंग बर्फीली चोटियों पर, गहन गम्भीर घाटियों में, अंधेरी गुफाओं में, विस्तार्ण वन प्रान्तरों में, नदियों के संगम और उनके निर्जन तटों पर रहते हैं। सामन्य जन मानस ने अपनी कल्पना को आस्था और विश्वास से पोषित कर ये माना कि उनका आराध्य अमुक स्थल पर या अमुक मन्दिर में विद्यमान है। मानवीय आस्थाओं के ये सभी देवस्थल 'तीर्थ' कहलाते हैं। उत्तराखण्ड में पंच प्रयाग (देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग और विष्णुप्रयाग) तथा उत्तराखण्ड के चार धाम बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री के नाम से प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित हैं, वे तीर्थाटन और पर्यटन की दृष्टि से आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि पहले थे। बद्रीनाथ एक विष्णुतीर्थ है जो नीलकण्ठ पर्वत की गोद में अलकनन्दा के दाहिने तट पर स्थित है। मन्दिर का समीपवर्ती सम्पूर्ण क्षेत्र वैष्णव क्षेत्र कहलाता है। आदिबद्री, ध्यान–योग बद्री, वृद्धबद्री और भविष्यबद्री इसी विष्णु क्षेत्रान्तर्गत माने जाते हैं। केदारनाथ द्वादश ज्योतिर्लिंगों में एक है। गंगोत्री पवित्र गंगा का उद्गम स्थल है। यमुना जी का उद्गम स्थल यमुनोत्री है। यहाँ यमुना जी का छोटा सा मन्दिर है। उत्तराखण्ड में पर्यटन और तीर्थाटन मिश्रित रूप में ही देखने को मिलता है। इसलिए यहाँ पर्यटन और तीर्थाटन विरोधाभाषी नहीं बल्कि एक दूसरे के पूरक और पोषक हैं। उत्तराखण्ड मे तीर्थटन का महत्वपूर्ण स्थान है। आदि काल से ही यहाँ तीर्थयात्री आते रहे हैं।

पारिस्थितिकी पर्यटन (Eco & Tourism)

पारिस्थितिकी पर्यटन का सामान्य एवं सर्वमान्य अर्थ है, प्रकृति की यात्रा जिसमें पर्यटक प्राकृतिक सौंदर्य का लुफ्त उठाए और यात्रा स्थल के वन्यजीवों एवं पेड़ पौधों को नजदीक से देख सके तथा उनकी सराहना कर सके (वाल, 2000)। इसे प्रकृति पर्यटन भी कह सकते हैं। उत्तराखण्ड राज्य में बारह राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य हैं। ये सभी ८०० मीटर से ले कर ५४०० मीटर के उंचाई पर स्थित हैं। यहाँ पर दो विश्व विरासत स्थल है जिन्हे नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान के नाम से जाना जाता है। इस राज्य में देश का पहला राष्ट्रीय उद्यान अवस्थित है जो जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान के नाम से प्रसिद्ध है। राजाजी राष्ट्रीय उद्यान, गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान, केदारनाथ कस्तूरी मृग अभयारण्य, गोविंद वन्यजीव अभयारण्य, अस्कोट वन्यजीव अभयारण्य एवं राष्ट्रीय उद्यान, बिनसर वन्यजीव अभयारण्य तथा सोना नदी वन्यजीव अभयारण्य आदि इस प्रदेश के अन्य राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य हैं। इन राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों में बाघ, हाथी, चीतल, साभर, नीलगाय, घडियाल, नाग, जंगली सूअर आदि पाये जाते हैं। फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान में 300 से अधिक जंगली फूलों की प्रजातियाँ प्राकृतिक रूप से खिलती हैं।

ग्रामीण पर्यटन (Rural Tourism)

ग्रामीण पर्यटन, ग्राम्य जीवन को पर्यटन उत्पाद के रूप में प्रयुक्त करता है। इस प्रकार के पर्यटन में पर्यटकों को ग्रामीण अंचल में ले जाते हैं, जहाँ वे ग्रामीण विरासत, खेत–खलिहान और ग्राम्य जीवन का खुद अनुभव कर सके (जेनेट एच.एम, 2000)। समुदाय आधारित ग्रामीण पर्यटन, ग्रामीण समुदाय के विकास का एक अच्छा विकल्प है। इसके द्वारा जंगलों के नजदीक बसे ग्रामीण समुदाय को जीविकोपार्जन के अवसर देने के साथ–साथ पर्यटकों को पर्वतीय ग्रामीण जीवन की एक झलक भी मिल जायेगी। उत्तराखण्ड राज्य में समुदाय आधारित ग्रामीण पर्यटन को विकसित करने के लिये कई पर्यटन परिपथों को चिन्हित किया गया है। इन परिपथों में हेमकुंड साहिब–गंघरिया–फूलों की घाटी परिपथ, गंगोत्री धाम परिपथ और नैनीताल–अल्मोडा–रानीखेत परिपथ मुख्य हैं। प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में, समुदाय आधारित ग्रामीण पर्यटन को, क्षेत्रीय समुदाय के लिये रोजगार के अवसर तथा आय का स्रोत प्रदान करने के विकल्प के रूप में विकसित किया जा रहा है। उत्तराखण्ड में अब तक लगभग तीस गाँवों को समुदाय आधारित ग्रामीण पर्यटन केंद्रो के रूप में विकसित किया जा चुका है। उत्तराखण्ड में समुदाय आधारित ग्रामीण पर्यटन केंद्रो में छोटी हलद्वानी, बिनसर, सारीगाव तथा नीरझरना आदि लब्ध–प्रतिष्ठित हैं। इन सभी जगहों पर यात्रियों के ठहरने की उचित व्यवस्था उपलब्ध है। यहाँ कुछ दिन प्रवास करके पर्यटक पर्वतीय ग्रामीण जीवन को नजदीक से देख और समझ सकते हैं। उत्तराखण्ड राज्य में समुदाय आधारित ग्रामीण पर्यटन के उत्तरोतर विकास की असीम समभावनाएँ हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन (Cultural tourism)

वह यात्रा जो किसी स्थल विशेष के लोगों के रहन–सहन, व्यवहार, जीने के तौर–तरीकों के अध्ययन के उद्देश्य से की जाती है, सांस्कृतिक पर्यटन कहलाती है (देवार, 2000)। हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं, हरी भरी वादियों और कलकल ध्वनि करती सदानीरा नदियों, विशेष कर गंगा–यमुना की पावन भूमि का यह राज्य आध्यात्मिक, धार्मिक और लोक संस्कृति के विविध आयामों से परिपूर्ण एक सम्पन्न राज्यहै। यह पावन भूमि देवी–देवताओं नाग– गंधर्वो की क्रीड़ा–स्थली, ऋषि –मुनियों की तपःस्थली, योगियो–साधुओं की साधना स्थली तथा विद्वानों की कर्मस्थली रही है। वेद पुराण, उपनिषद्, धर्मशास्त्र तथा अन्यान्य श्रेष्ठ ग्रन्थों में इस देवभूमि रूपी उत्तराखण्ड का सांस्कृतिक वैभव अपनी उज्ज्वल कीर्ति के साथ जगमगाता रहा है। लगभग हर महीने कोई न कोई त्योहार मनाया जाता है। त्योहार के बहाने अधिकतर घरों में समय–समय पर पकवान बनते हैं। स्थानीय स्तर पर उगाई जाने वाली गहत, रैंस, भट्ट आदि दालों का प्रयोग होता है। प्राचीन समय में मण्डुवा व झुंगोरा स्थानीय मोटा अनाज होता था। शेष भारत के समान ही उत्तराखण्ड में पूरे वर्षभर उत्सव मनाए जाते हैं। भारत के प्रमुख उत्सवों के अलावा देवीधुरा मेला, पूर्णागिरि मेला, नंदा देवी मेला, गौचर मेला, वैशाखी मेला, उत्तरायणी मेला, विशु मेला, हरेला, गंगा दशहरा और नंदा देवी राज जात यात्रा यहाँ के कुछ स्थानीय त्योहार हैं।

लोक कला की दृष्टि से उत्तराखण्ड बहुत समृद्ध है। शुभ अवसरों पर महिलाएँ घर में अल्पना बनाती है। इसके लिए घर, ऑगन या सीढ़ियों को गेरू से लीपा जाता है। चावल को भिगोकर उसे पीसा जाता है। उसके लेप से आकर्षक चित्र बनाए जाते हैं। विभिन्न अवसरों पर नामकरण चौकी, सूर्य चौकी, स्नान चौकी, जन्मदिन चौकी, यज्ञोपवीत चौकी, विवाह चौकी, धूमिलअर्ध्य चौकी, वर चौकी, आचार्य चौकी, अष्टदल कमल, स्वास्तिक पीठ, विष्णु पीठ, शिव पीठ, शिव शक्ति पीठ, सरस्वती पीठ आदि परम्परागत गाँव की महिलाएँ स्वयं बनाती है।

यहाँ की लोक धुनें भी अन्य प्रदेशों से भिन्न है। यहाँ के बाद्य यन्त्रों में नगाड़ा, ढोल, दमुआ, रणसिंग, भेरी, हुड़का, बीन, डौंरा, कुरूली, अलगाजा प्रमुख है। यहाँ के लोक गीतों में न्योली, जोड़, झोड़ा, छपेली, बैर व फाग प्रमुख होते हैं। यहाँ का छोलिया नृत्य काफी प्रसिद्ध है। इस नृत्य में नृतक लबी–लम्बी तलवारें व गेंडे की खाल से बनी ढाल लिए युद्ध करते है। कुमाऊँ तथा गढ़वाल में झुमैला तथा झोड़ा नृत्य होता है। झौड़ा नृत्य में महिलाएँ व पुरूष बहुत बड़े समूह में गोल घेरे में हाथ पकड़कर गाते हुए नृत्य करते है। नृत्यों में सर्प नृत्य, पाण्डव नृत्य, जौनसारी, चांचरी भी प्रमुख है। इस प्रकार यह प्रदेश सांस्कृतिक पर्यटन के लिये सर्वदा उपयुक्त है।

उत्तराखण्ड में पर्यटन विकास की चुनौतियाँ

पर्यटन की विपुल सम्भावनाओं के साथ–साथ उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन के विकास की राहें बहुत आसान नही है। राज्य अभी तक अपने पूर्व में सुस्थापित पर्यटक स्थलों को छोड़ कर बाकी जगहों पर मूलभूत यात्री सुविधाएँ विकसित नही कर पाया है। उत्तराखण्ड में पर्यटन के विकास की राह की कुछ बाधाएँ निम्नवत है–

- पर्यटन की बुनियादी सुविधाओं का अभाव (Lack of tourist infrastructure)
- नए स्थलों का अन्वेषण का अभाव (Lack of Exploration of new destination)
- त्वरित आपदा प्रबंधन का अभाव (Lack of quick of Disaster management)

पर्यटन की बुनियादी सुविधाओं का अभाव (Lack of tourist infrastructure)– किसी भी स्थल पर पर्यटन के विकास के लिये कुछ मूलभूत यात्री सुविधाओं का होना आवश्यक है, जैसे वह स्थान मुख्य स्थानों से यातायात के साधनों (रेल, सड़क या वायु मार्ग) से जुड़ा हो, प्रचुर मात्रा में यात्रियों के ठहरने की उचित व्यवस्था हो, चिकित्सा सुविधाएं उप्लब्ध हो, इत्यादि । वर्तमान में राज्य के कुछ पूर्व में सुस्थापित पर्यटक स्थलों को छोड़ कर बाकी जगहों पर मूलभूत यात्री सुविधाएँ अभी भी लगभग अविकसित हैं। बिना इन मूलभूत यात्री सुविधाओं के विकास के, राज्य में पर्यटन का उचित विकास नामुमकिन है।

नए स्थलों का अन्वेषण का अभाव (Lack of Exploration of new destinations)– राज्य अभी तक अपने पूर्व में सुस्थापित पर्यटक

स्थलों जैसे अल्मोड़ा,औली, बागेश्वर, देहरादून, हरिद्वार, हेमकुंड साहिब, जागेश्वर धाम, कौसानी, मसूरी, नैनीताल, पुर्णागिरि, रानीखेत, ऋषिकेश, फूलों की घाटी को छोड़ कर अन्य पर्यटक स्थल विकसित नहीं कर पाया है। इसलिये यात्रा सीजन में यहाँ पर्यटकों बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इस पहाड़ी प्रदेश में नये–नये पर्यटक स्थलों की कमी नही है, जरूरत है तो इन्हे खोज कर, विकसित करके पर्यटकों में प्रतिस्थापित करने की, यदि ऐसा हो जाये तो यह प्रदेश पर्यटकों का स्वर्ग बन जाए।

त्वरित आपदा प्रबंधन का अभाव (Lack of quick of Disaster management)– उत्तराखण्ड राज्य में भी अन्य पर्वतीय राज्यों की भाँति प्राकृतिक आपदाओं की सम्भावानाएँ बनी रहती हैं। इन आपदाओं में भू–स्खलन, बिजली गिरना, बादल फटना, भूकम्प आना, अतिवृष्टि होना, हिमपात होना इत्यादि प्रमुख हैं। राज्य में इन आपदाओं से निपटने निपुण नही है, जिसका ताजा उदहरण हाल में आयी केदारनाथ की आपदा है।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड राज्य एक पर्वतीय प्रदेश है और यहाँ पर पर्यटन के विकास के सुनहरे अवसर उपलब्ध हैं। भौगोलिक दृष्टि से भी यह प्रदेश पर्यटन के लिये सर्वदा उपयुक्त है। यहाँ पर साहसिक पर्यटन, तीर्थाटान, पारिस्थितिकी पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, मीटिंग, इंसेंटिव टूर, प्रदर्शनी और सम्मेलन के क्षेत्र में पर्यटन के विकास की प्रबल सम्भावनाएँ हैं। पर्यटन की अपार सम्भावनावों के साथ–साथ राज्य में पर्यटन के विकास की राह में कई कठिनाईयाँ भी हैं, जैसे पर्यटक स्थलों पर बुनियादी सुविधाओं का अभाव, नए पर्यटक स्थलों का अन्वेषण न होना और त्वरित आपदा प्रबंधन की कमी। यदि इस राज्य के पर्यटन नीति निर्माता इन समस्याओं का निराकरण कर सके तो निश्चित रूप से उत्तराखण्ड में पर्यटन का विकास द्रुत गति से होगा ।

संदर्भ ग्रंथ

1. के. देवार. (2000). रुरल टूरिज्म. ज़फर ज़ाफरी में, इंसाएक्लोपिडिया ऑफ टूरिज्म (पृ. 125–126). लंदनरू रौतलेज़
2. राल्फ बक्ले. (2010). एडवेंचर टूरिज्म मैंनेजमेंट. आक्सफोर्डरू बटरवर्थ–हैंनीमैन
3. उत्तराखण्ड सरकार का आधिकारिक वेब साइट. (दि.न.). उत्तराखण्ड सरकार का आधिकारिक वेब साइट http://uk.gov.in/home/index1 से, 3 अप्रैल 2019 को पुनर्प्राप्त
4. उत्तराखण्ड सरकार का आधिकारिक वेब साइट. (दि.न.). उत्तराखंड सरकार का आधिकारिक वेब साइट: http://uk.gov.in/files/pdf/Uttarakhand_at_a_glance_in_english_2012-13.pdf ls, 14 अप्रैल 2018 को पुनर्प्राप्त
5. ज्योफरी वाल. (2000). ईकोटूरिज्म. ज़फर जाफरी में, एंसाक्लोपीडिया ऑफ टूरिज्म (पृ. 165). लंदनरू रौतलेज़
6. जेनेट एच.एम. (2000). रूरल टूरिज्म. ज़फर ज़ाफरी में, इंसाक्लोपीडिआ ऑफ टूरिज्म (पृ. 514). लंदन